THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (DR. DEBI PROSAD PAL): (a) to (c) Government have received some representations from employees/associations of the erstwhile New Bank of India against some of the provisions contained in the New Bank of India (Amalgamation & Transfer of Undertaking) Scheme, 1993 notified on 4.9.1993 and 8.12.1993. They have also staged dharnas before the Banking Division at Parliament Street, New Delhi.

(d) Some of the employees/Employees/associations of erstwhile New Bank of India aggrieved by the provisions contained in the scheme have filed writ petitions in various High Courts and special leave petitions in Supreme Court of India and as such the matter is subjudice.

White Paper on Internal and External Debt

221. SHRI O.P. KOHLI: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) whether the Reserve Bank of India had expressed concern on the serious internal debt situation;

(b) if so, whether the Finance Minister had announced some time ago that he would issue a white paper on external and internal debts of the country; and

(c) if so, the reasons for not issuing a White Paper on the debts of the country so far?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (DR. DEBI PROSAD PAL): (a) Reserve Bank of India in its Annual Report for 1994-95 has mentioned that Government should prune fiscal deficit so that borrowings can be made from the market at reasonable rates of interest. Government would endeavour to contain fiscal deficit during the current year by maximising revenues and controlling expenditure.

(b) and (c) As per the assurance given by Finance Minister, the White Paper on India's External Debt is being finalised and it will be made available shortly.

विदेशी मुद्रा का अन्तर्वाह

222. **श्री सोमपाल:** क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि हाल के महीनों में विदेशी मुद्रा के अन्तर्वाह में कुछ कमी आई है;

(ख) क्या यह भी सच है कि विदेशी मुद्रा की मांग में अचानक हुई वृद्धि और अन्तर्वाह में आई गिरावट के कारण रुपये की कीमत में कमी हुई है;

(ग) यदि हां, तो दोनों प्रवृत्तियों के लिए जिम्मेदार मुख्य कारक क्या हैं; और

(घ) इस स्थिति से निपटने के लिए सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक ने क्या प्रभावी उपाय किए हैं और उनके क्या परिणाम रहे हैं?

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (डॉ० देबी प्रसाद पाल): (क) विदेशी मुद्रा बाजार में अस्थिरता यह संकेत करती है कि पहले की अवधि की स्थिति की तुलना में हाल के कुछ महीनों के दौरान विदेशी मुद्रा के अन्तर्-वाह में कुछ गिरावट आई है।

(ख) हाल के महीनों में, विदेशी मुद्रा बाजार में पर्याप्त अस्थिरता रही है और अमरीकी डालर सहित प्रमुख मुद्राओं के संबंध में रुपए का कुछ मूल्य ह्रास हुआ है।

(ग) हाल की अवधि में, आयातकों से विदेशी मुद्रा की मांग में तेजी और निर्यातों व अन्य स्रोतों से आय में गिरावट का रुपए के मूल्य पर ह्रासकारी दबाव पड़ा है। आयातकों को अपनी विदेशी मुद्रा की पूर्ति का प्रयत्न करने और निर्यातकों द्वारा रुपए के विनिमय दर में और अधिक अवमूल्यन की संभावना में प्राप्तियों की वसूली में विलम्ब किए जाने से विदेशी विनिमय बाजार में असंतुलन हुआ।

(घ) भारतीय रिजर्व बैंक ने रुपए के समुत्थान में सहायता देते हुए रुपए पर अत्यधिक दबाव को निष्प्रभावी करने के लिए बाजार में हस्तक्षेप किया। भारतीय रिजर्व बैंक ने विदेशी मुद्रा की आपूर्ति को बढ़ाने तथा मांग को कम करने के लिए भी बहुत से उपाय किए हैं। इन उपायों में ये शामिल हैं — (i) अनिवासी सावधि जमा पर ब्याज दरों में वृद्धि; (ii) 27.10.95 को बकाया स्तर से अधिक एन०आर०ई० और एन०आर० एन०आर० जमा राशियों में वृद्धि के संबंध में नकदी प्रारक्षित अनुपात की आवश्यकताओं में छूट; (iii) 90 दिनों से अधिक और 6 महीने तक की परिपक्वताओं के लिए अमरीकी डालर में मूल्य-वर्गित लदानपश्च निर्यात